आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 3/सितंबर 2022
Received:05/08/2022; Accepted:12/09/2022; Published:24/09/2022

हिन्दी कविता में राष्ट्रीयता का स्वर

- डॉ. दिलीप मेहरा
आचार्य,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
सरदार पटेल विश्वविद्यालय
वल्लभ विद्यानगर-आनंद गुजरात-388120

डॉ. दिलीप मेहरा, हिन्दी कविता में राष्ट्रीयता का स्वर , आखर हिंदी पत्रिका, खंड 2/अंक 3/सितंबर 2022, (176-188)

"जो भरा नहीं भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं
वह ह्रदय नहीं है पत्थर है,जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ।"

-मैथिलीशरण गुप्त

भूमिका

भारत की स्वाधीनता आंदोलन में अनेक नेता,अनेक नव युवकों,अनेक क्रांतिकारों के साथ साथ अनेक हिन्दी कवियों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। हिन्दी कवियों में भारतेन्दु जी,माखनलाल चतुर्वेदी,रामधारी सिंह 'दिनकर',जयशंकर प्रसाद,सुभद्रा कुमारी चौहान,सूर्यकांत त्रिपाठी,बलकृष्ण शर्मा 'नवीन' ,रामनरेश त्रिपाठी,बंकिम चन्द्र चेटर्जी जैसे अनेक कवियों ने अपनी कलम के माध्यम से देश को आजाद करने की मुहिम चलाई थी। इन सभी कवियों के साथ साथ प्रेमचंद जैसे हिन्दी कथाकार भी अपनी लेखनी के माध्यम से भारत के लोगों को आजादी की लड़ाई के लिए प्रेरित कर रहे थे। इतना ही उर्दू शायर इकबाल जैसे अनेक मुस्लिम शायर भी वतन की चिंता में अपनी कलम को चला रहे थे। यहाँ आलोचक विपिनचंद्र का मत उल्लेखनीय है- **"जब हम भारत के स्वतन्त्रता-संग्राम की बात करते है तो हमारा तात्पर्य भारतीय इतिहास के उस दौर से होता है जिसमें भारत पर अंग्रेजों का शासन था और यहाँ के लोग विदेशी आधिपत्य को समाप्त केआर स्वाधीन होना चाहते थे।"1** 1857 के विप्लव से ही देश को आजाद करने की मुहिम शुरू हो गई थी। उस मुहिम में राजाओं ने ही नहीं बल्कि अनेक हिंदी कवियों ने इस मुहिम में अपना योगदान दिया।

भारत का पहला स्वाधीनता संग्राम और हिंदी कविता

1857 के समय से ही हमारी हिंदी कवि भारत की प्रजा को जागरूक करने के लिए कविताओं की रचना करना शुरू कर दिया था। सन 1857 के बागी सैनिकों का कौमी गीत उसका श्रेष्ठ उदाहरण है-

"हम हैं इसके मालिक हिंदुस्तान हमारा

पाक वतन है कौम का जन्नत से भी प्यारा

ये है हमारी मिलकियत हिंदुस्तान हमारा

इसकी रुहानियत से रोशन है जग सारा। " 2

सन 1857 के इस बागी सैनिकों के कौमी गीत की रचना की थी। इसके पश्चात कल्याण से कुंडरा ने झांसी की रानी पर अपनी महत्वपूर्ण कविता प्रस्तुत की थी| जो यहां उल्लेखनीय है-

"छल बल सों झासी लई गंगाधर की नार

ताको अब आगे कहत भली भांति ब्यौहार।

आई कड़वाई साथ उकड़ सिपाई

अंगरेज सैन धाई दुहू ओर ते लराई

तैगन की ताई छिन छूटे बहु प्राण।"3

अवध के राणा वेणी माधव की वीरता की प्रशस्ति चारों ओर फैली थी अतः लोक भाषा अवधी में जो सन 1857 में अंग्रेजों की फौज से लड़ाई लड़े थे उनके लिए यह गीत उल्लेखनीय है-

"अवध में राणा भयो मरदाना।

पहिल लड़ाई भई बक्सर मां सेमरी के मैदाना।

हुवां से जाय पुरवामां जीत्यो तबै लत घबराना।

नक्की मिले मानसिंह मिलीगे गए जाने सुदर्शन काना।"4

बाबू कुंवर सिंह पर उनके आश्रित कवि राम कवि ने 'बाबू कुवर सिंह'नामक कविता में अंग्रेजों को परास्त करने पर गुणगान किया गया है। जैसे-

"जैसे मृगराज गजराजन कै झुण्डन पै प्रबल प्रचंड सूंड खंडत उदण्ड है।

जैसे बाजि लपकि लपेट के लवान दल,दलमल डारत प्रचारत विहंड है।

कहै राम कवि जैसे गरुड़ गरब गहि अहि कुल दण्डी दंडी मेटत घमंड है।

तैसे ही कुंवर सिंह कीरतिअमर मंडी

फौज दण्डी दण्डी फौज फ़िरंगानी की करी सु खंड खंड है।।"5

इस रचना को पढ़कर रीति कालीन कवि भूषण की याद ताजा हो जाती है। वीर योद्धा तात्या टोपे पर ब्रज प्रदेश के हरिफुल कवि ने अपनी कविता लिखी। जिसमें तात्या टोपे जी का यश गान किया है। कविता का शीर्षक 'तात्या टोपे पर'का उदाहरण देखने लायक है-

"हाथ में नगन खड़ग मारिबे कू एक पग,

तन मन देस कूँ को समरपित किनो है।

आ गे बढी पीछे हटि धाई को मिचक्का करि।

टूक टूक छिन में विढम दल कीनो है।"6

इस प्रकार सन 1857 के विप्लव में राजा रजवाडो ने जो योगदान दिया था उस पर अनेक तत्कालीन कवियों ने अपनी कलम चलाई थी। इससे प्रेरित होकर आगे राष्ट्र को आजाद करने के लिए अनेक वीर शहीद आगे आते हैं।

हिंदी उर्दू की देशभक्ति पूर्ण कविताएं

कुंवर प्रताप चंद्र,आजाद ललिता प्रसाद अख्तर,राम प्रसाद बिस्मिल ,अशफाक अल्ला खा,ऐसे ही शायर और भारत मां के सपूत हैं जो लीक पर नहीं चले,लीक से हटकर चले,माता की स्वतंत्रता के यज्ञ की वेदी में अपनी आहुती जिन्होंने दी। उनकी रचनाओं में देशभक्ति के ओजस्वी भाव फूट-फूटकर भरे हुए मिलते हैं। यह रचनाएं साहित्यिक गुणवत्ता में भी खरी उतरती है। मुंशी गौरी शंकर लाल ने 'जज्बातेअख्तर' नामक नज्म में देश को आजाद करने की सिफारिश की है। यथा-

"उठाए जुल्म कब तक और कब तक सख्तियां झेले,

सहें कब तक जफा- ए- गैर ताकि रंजो- गम झेले।

हमारी काहिली अगियार के हक में गनीमत है

हमारा नींद से बेदार हो जाना कयामत है।

न घबराते हैं तीरों से न तलवारों से डरते हैं,

हम अपनी धुन के पूरे हैं जो कहते हैं वो करते हैं।"7

आजाद कुंवर प्रतापचन्द्र की कविता 'वतन के वास्ते'में देशभक्ति की आग धधकती नजर आती है। कवि हमें आजादी की लड़ाई के लिए ललकारता है। उदाहरण-

"क्या हुआ गर मर गए अपने वतन के वास्ते,

बुलबुले कुर्बान होती है वतन के वास्ते।

तरस आता है तुम्हारे हाल पे,ये हिंदीयों,

गैर के मुहताज हो अपने कफन के वास्ते।"8

बिस्मिल रामप्रसाद की 'सरफरोशी की तमन्ना' नामक नज्म आज भी भारत हर छोटे बड़े जुबान पर राज करती है। इस प्रकार की नज़्में हमें देश के लिए कुछ कर दिखाने के लिए मजबूर करती है। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसी नज्में देश केलिए मर मिटने के लिए हमें प्रेरित करती है। उदाहरण-

"सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है

देखना है जोर कितना बाजु-ए-कातिल में है

ऐ शहीदों ! मुल्कों-मिल्लत मैं तेरे ऊपर निसार

अब तेरी हिम्मत की चर्चा ग़ैर की महफ़िल में है

आज फिर मकतल में कातिल कह रहा है बार-बार

क्या तमन्ना-ये- शहादत भी किसी के दिल में है।"9

वीर भगत सिंह हमारे देश के ऐसे वीर शहीद है जिन्होंने हमारे सभी देशवासियों मिस्टर मिटने केलिए मिसाल कायम की है। अंत: कमल जी 'देश भगत का प्रलाप' नामक कविता में राष्ट्रीय चेतना को उजागर करते हुए लिखते हैं-

"हमारा हक है हमारी दौलत,किसी के बाबा का जर नहीं है।

है मुल्क भारत वतन हमारा,किसी की खाला का घर नहीं है।

न देश का जिनमें प्रेम होवे,दुखी के दुख से जो दिल न रोवे।"10

भारत की आजादी में हिंदी कवियों का योगदान

भारत को आजादी दिलवाने में सन 1857 से लेकर 1947 तक अनेक हिंदी कवियों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस कवियों ने अपनी कलम के माध्यम से लोक जागरण की आधी चलाई थी। इस कवियों में प्रमुख कवि है- भारतेंदु हरिश्चंद्र,प्रताप नारायण मिश्र,बालमुकुंद गुप्त,मैथिलीशरण गुप्त,स्नेही,माखनलाल चतुर्वेदी,सुभद्रा कुमारी चौहान,रामधारी सिंह दिनकर,बालकृष्ण शर्मा नवीन,जगन्नाथ प्रसाद, मिलिंद,रामचरित उपाध्याय,सोहनलाल द्विवेदी,श्याम नारायण पांडे,हरि कृष्ण प्रेमी,बच्चन जी के अलावा आधुनिक हिंदी कविता के कवि श्रीधर पाठक,जयशंकर प्रसाद,सूर्यकांत त्रिपाठी निराला,सुमित्रानंदन पंत,महादेवी वर्मा जैसे अनेक कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से देश की आजादी के लिये कलम चलाई थी। इस राष्ट्रीय चेतना के माध्यम से भारत के जनमानस को जगाने का प्रयत्न किया था। इतना ही नहीं छायावाद के बाद के कवियों ने इस मुहिम में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था। जैसे- नागार्जुन,केदारनाथ अग्रवाल,रांगेय राघव,शिवमंगल सिंह सुमन जैसे प्रगतिशील रचनाकारों ने भी अपनी कलम चलाई है। यहां हमारा उपक्रम सभी कवियों का जो योगदान रहा है उसे उजागर करने का हम प्रयत्न करेंगे।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने 'खूब लड़ी मर्दानी'नामक कविता लिखकर हिंदी साहित्य में तहलका मचा दिया था। इनकी यह झांसी की रानी पर लिखी गई कविता आज भी छोटे बड़ों के कंठ पर आसीन है। जैसे -

" सिंहासन हिल उठे,राजवंशों ने भृकुटी तानी थी।

बूढ़े भारत में भी आई,फिर से नई जवानी थी।

गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी।

दूर फिरंगी को करने की,सबने मन में ठानी थी।

चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी।

बुंदेलों,हरबोलों के मुंख हमने सुनी कहानी थी।

खूब लड़ी मरदानी वह तो झांसी वाली रानी थी। "11

इस कविता के माध्यम से अनेक लोगों ने देश को आजाद करने के लिए आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस जोशेले स्वर को आगे ले जाने के लिए इस वीरांगना को केदारनाथ अग्रवाल अपनी कविता 'मैंने उसको जब जब देखा'कविता में लिखते हैं-

"मैंने उसको

जब जब देखा,

लोहा देखा।

लोहे जैसा तपते देखा ढलते देखा

मैंने उसको

गोली जैसे चलते देखा।"12

अतीत के अनेक मार्मिक संदर्भों की शक्ति देते हुए हिमालय के माध्यम से देशवासियों को रामधारी सिंह दिनकर का ओजस्वी उद्बोधन है। कविता का शीर्षक है- 'हिमालय'। उदाहरण-

"मेरे नगपति! मेरे विशाल!

उस पुण्य भूमि पर आज तपी रे,आन पड़ा संकट कराल,

व्याकुल तेरे सूत तड़प रहे, डस रहे चतुर्दिक विविध व्याल।

मेरे नगपति! मेरे विशाल!

कितनी मणियाँ लुट गई,मिटा कितना मेरा वैभव अशेष,

तू ध्यानमग्न नहीं रहा,इधर वीरान हुआ प्यारा स्वदेश।"13

इस प्रकार रामधारी सिंह दिनकर ने अपने भारत के अतीत के मार्मिक संदर्भ की साक्षी देते हुए हिमालय के माध्यम से देशवासियों को जागृत करने का प्रयत्न किया है। राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत सोहनलाल द्विवेदी जी ने भी अपनी अनेक कविताओं में गुलाम भारत वासियों को जागरण का संदेश देने का प्रयत्न किया है। वे भारत के अतीत वैभव को याद करते हुए अपनी 'भैरवी'कविता में देश को जगाने का प्रयत्न किया था। यथा-

"जागो,हे पांचाल निवासी जागो हे गुर्जर मद्रासी।

जागो,हिंदू मुगल मराठे,जागो मेरे भारतवासी,

जननी की जंजीरे बजती जगा रहे कड़ियों के छाले,

सुना रहा हूं तुम्हें भैरवी,जागो सोने वाले।"14

इस प्रकार आप देख सकते हैं कि भारत की आजादी दिलवाने में हिंदी कवियों का अमूल्य योगदान है। इस आजादी के आंदोलन में माखनलाल चतुर्वेदी कवि को भी हम याद करना चाहेंगे। माखनलाल चतुर्वेदी हमारे राष्ट्रकवि है। उन्होंने 'पुष्प की अभिलाषा' तथा 'जवानी', 'कैदी और कोकिला' कविताओं के माध्यम से देश को जागृत करने की कोशिश की थी।यहाँ मैं उनकी 'पुष्प की अभिलाषा' और 'जवानी' कविता का

मैं यहां उदाहरण देना चाहूंगा। पुष्प की अभिलाषा है कि-

"चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं।

चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध प्यारी ललचाउ।

चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि! डाला जाऊं।

चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पे इतराउ।

मुझे तोड़ लेना वनमाली,उस पथ पर तुम देना फेंक।

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जाएं वीर अनेक।।"15

कवि माखनलाल चतुर्वेदी सामंती प्रतीकों का अस्वीकार करते हुए नजर आते हैं। इनकी यह प्रतीकात्मक कविता है। पुष्प मातृभूमि की बलिवेदी पर शीश चढ़ाने जाने वालों के पैरों के नीचे कुचले जाने पर ही उसके होने की सार्थकता है। वे'जवानी' कविता में देश के युवाओं को आजादी की लड़ाई में आगे आने के लिए जगाते हैं। जिस तरह कृष्ण ने महाभारत में कुरुक्षेत्र में गीता के उपदेश से अर्जुन को कर्मनिष्ठ होने की प्रेरणा दी थी। ठीक उसी तरफ पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जी ने एक भारतीय आत्मा और बलि पंथी के रूप में भारतीय स्वातंत्र्य संघर्ष के कुरुक्षेत्र में अपनी ओजस्वी कविता के बलिदान की हूँकार से भारत की जवानी को पुकार पुकार कहा-

"प्राण,अंतर में लिए पागल जवानी,

कौन कहता है कि तू विधवा हुई,

खो आज पानी ?

मसल दे अपने इरादों-सी उठाकर

दो हथेली है कि पृथ्वी गोल कर दें

रक्त है?या है नसों के क्षुद्र पानी,

जांच कर,तू सीस दे देकर जवानी।"

" द्वार बली का खोल चल भूगोल कर दे

एक हिमगिरी एक सिर का मोल कर दे

चला दे स्वतंत्र प्रभु पर अमरपानी

विश्व माने तू जवानी है जवानी।"16

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अंग्रेजों की कड़ी आलोचना की है। वे नए जमाने की मुकरी में अंग्रेजों की फजीहत करते नजर आते हैं। वे कहते हैं-

"सब गुरुजन को बुरा बतावै ,अपनी खिचड़ी अलग पकावै,

भीतर तत्व न,झूठी तेजी,क्यों,सखि सज्जन,नहीं अंग्रेजी।।

"भीतर भीतर सब रस चूसै,हंसी हंसी कै तन मन धन मूसै,

जाहिर बातन में अति तेज,क्यों ,सखि सज्जन?नहि अंग्रेज।।"17

इस प्रकार वे अंग्रेजों की पोल खोलते नजर आते हैं। 'अंधेर नगरी'नामक कविता में भी वे अंग्रेज़ सरकार की पोल करते नजर आते है । जगन्नाथ प्रसाद मिश्र हितेषी ने भी देश को आजाद कराने के लिए जनता का आह्वान किया है। वे 'शहीदों की चिताओं'पर नामक कविता में लिखते हैं-

"अरूजे कामयाबी पर कभी हिन्दोस्तां होगा।

रिहा सैयाद के हाथों से अपना आशना होगा।

चखायेंगे मजा बरबादिये गुलशन का गुंलची को।

बहार आ जाएगी उस दिन जब अपना बागबा होगा

वतन की आबरू का पास देखें कौन करता है,

सुना है आज मकतल में हमारा इंतहा होगा।

शहीदों की चिताओं पै जुडेंगे हर बरस मेले।

वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।"18

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'भी राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत कवि है। उन्होंने भी भारत को आजाद करने के लिए अनेक कविताओं की रचना की है। 'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ'नामक कविता इस दृष्टि से उल्लेखनीय है- "कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए।

"एक हिलोर इधर से आए,एक हिलोर उधर से आए।

प्राणों के लाले पड़ जाए त्राहि-त्राहि नभखंड में छा जाएं

नाश और सत्यानाशों का धुआंधार जग में छा जाए।

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ।"19

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने भी राष्ट्र को आजाद करने अनेक कविताओं की रचना की। भारत भारती काव्य संग्रह राष्ट्रीयता से ओतप्रोत काव्य है। अत: वे हमारे राष्ट्र कवि भी है। उन्होंने लिखा है कि-

“जो भरा नहीं भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं

वह ह्रदय नहीं है पत्थर है,जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ।”

“जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।

वह नर नहीं नर पशु निरा और मृतक समान है ।“” 20

सूर्यकांत त्रिपाठी जी निराला ने भी अपनी अनेक कविताओं में राष्ट्र का गान किया है। राष्ट्र को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त करने के लिए वे आह्वान करते है। वे 'जागो फिर एक बार' कविता में हमे जगाते हुए कहते हैं-

"समर में अमर कर प्राण,

गान गाए महासिंधु से

सिंधुनद तीर वासी ,सैधव तुरंगों पर,

चतुरंग चमु संग।

सवा सवा लाख पर एक को चढ़ाऊंगा,

गोविंद सिंह निज नाम तब कहाउँगा।"21

कवि ने गोविंद सिंह को याद करके गोविंद सिंह की वीरता को उजागर किया है। वे 'वर दे 'कविता में भी वीणावादिनी से प्रार्थना करते हैं कि भारत को पुनः उसको विवेक उसकी उर्जा उसका ज्ञान प्रदान करें। 'सा विद्या या विमुक्त'है ज्ञान की देवी जगत वासियों की जनता को ज्ञान का प्रकाश दे,नई दिशाओं में ले जाने का साहस दे। यथा-

" वर दे,वीणावादिनी ! वर दे !

प्रिय स्वतंत्र रव,अमृत मंत्र नव,

भारत में भर दे।

नव गति नव लय ताल छंद नव

नवल कंठ,नव जलद मंद्र-रव

नव नभ के नव विहग-वृंद को,

नव पर नव स्वर दे

वर दे वीणावादिनी वर दे। "22

जयशंकर प्रसाद भी देश के राष्ट्रीय चेतना का गौरव गान गाते हैं। इस दृष्टि से उनकी 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से' नामक छोटी कविता उल्लेखनीय हैं-

"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से,प्रबुद्ध शुद्ध भारती,

स्वयंप्रभा समुज्वला स्वतंत्रता पुकारती,

अमर्त्य वीर पुत्र हो प्रतिज्ञा दृढ़ प्रतिज्ञ सो चलो,

प्रशस्त,पुण्य पंथ है,बढ़े चलो,बढ़े चलो।"23

जय शंकर प्रसाद की अन्य कविताओं में 'पेशोला की प्रतिध्वनि','शेर सिंह का शस्त्र समर्पण'जैसी कविताएं भी उल्लेखनीय है पीआर शोधलेख की सीमा के कारण [स कविताओं का उदाहरण नहीं दे प रहाहूँ । अन्य अनेक कविताओं को [स लेख में जगह नहीं दे पा रहा हूँ उसका मुझे बहुत अफसोस है।

इस प्रकार आप देख सकते हैं कि कवियों ने अपनी कलम के माध्यम से देश को आजाद करने के लिए अनेक राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत कविताएं लिखी है,जिससे पूरे भारतवर्ष में जागृति का स्वर उजागर होता है।

निष्कर्ष

इस कवियों के साथ साथ बलभारत की आजादी में भारत के अनेक कवियों ने अपनी अपनी भाषा में देश को आजाद करने के स्वर अपनी कविताओं में भरे हैं। यहां मात्र हमने हिंदी ,उर्दू कविता को लिया है । राष्ट्रीय प्रेम की कविताएं, गजलें, गीत के बारे में शिव कुमार मिश्राजी ने ठीक ही लिखा है- **"लगभग एक शताब्दी तक चलने वाले इस स्वाधीनता संघर्ष के दौरान कदाचित ही देश का कोई गली कुचा,गांव,कस्बा नगर या महानगर हो जहां राष्ट्र और राष्ट्रीय की जनता की मुक्ति कामी आकांक्षाओं को स्वर देने वाली ये कविताएं,गीत या गजलें न गूंजी हों। स्वतंत्रता-संघर्ष के दिनों में करोड़ों देशवासियों ने इन रचनाओं को प्रभात फेरी में,जुलूस और जनसभाओं में सुना और गाया है। ये कविताएं,ये गीत और ये गजलें कारावास क यातनाएं सहते स्वतंत्रता सेनानियों के कंठों से फूटी है। फांसी के फंदे की ओर जाते हुए अमर शहीदों ने इन्हें गाया है और गुनगुनाए है। ये वे रचनाएं हैं जिन्होंने देशवासियों को राष्ट्र की स्वतंत्रता के महायज्ञ में अपना सर्वस्व अर्पित करने की प्रेरणा प्रदान की है। इनके रचनाकारों में कुछ ज्ञात कुछ अलपज्ञात और कुछ भले ही अज्ञात रहे हो,उनकी रचनाएं अमित आलेखों के रूप में समय की छाती पर अंकित है और अंकित रहेगी। राष्ट्र के कठिन क्षणों में आज भी उतनी ही जीवंत और प्रेरणास्पद हैं,जितना तब थी, जब अग्निशिखाओं की तरह सुलगते और धधकती हुए स्वाधीनता संघर्ष में रत,स्वाधीनता के लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए राष्ट्र और राष्ट्रवासियों के पथ को आलोकित कर रही है।"24**

इस प्रकार भारत की आजादी में जितना योगदान अमर शहीदों का,नेताओं ,जनता का है तो उनको समय समय पर जगाने वाले कवियों के योगदान को भी हम नकार नहीं सकते। अंत में सुधीन्द्र की इन पंक्तियों के साथ अपनी वाणी को विराम देना चाहूँगा-

“चलो शहीदों! स्वतन्त्रता के पुण्य समर की बेला है ,

तुम भी अपना भाग बटा लो,आजादी का मेला है।”25

सन्दर्भ सूची

1. आजादी की अग्निशिखाएँ,सम्पादक-शिवकुमार मिश्र,पृ.9

2. वही, पृ.46

3. वही, पृ.47

4. वही, पृ.49

5. वही, पृ.50

6.वही, पृ.50

7. वही, पृ.181

8. वही, पृ.182

9. वही, पृ.187

10. वही, पृ.58

11. वही, पृ.58

12. वही, पृ.56

13. वही, पृ.63

14. वही, पृ.71

15. वही, पृ.75

16. वही, पृ.76

17.वही, पृ.84

18.वही, पृ.91

19.वही, पृ.93

20.भारत भारती,मैथिलीशरण गुप्त,पृ.110

21. वही, पृ.98

22. वही, पृ.100

23. वही, पृ.108

24. वही, पृ.1

25. वही, पृ.209

****